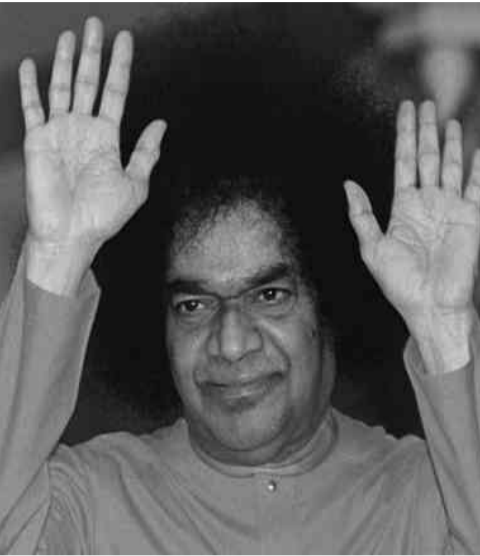


मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 29-02-2016 ● अंक-449 ● तारीख - 01 मार्च 2016, फाल्गुन कृष्ण - 7 ● मंगलवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रुपया ● पृष्ठ-01

श्री सत्यसाई - अनमोल वचन



भगवान का नाम गान करते रहो तथा मन में उसकी महिमा का चिन्तन चलता रहे।

मुझे समाज ने क्या दिया

- सामाजिक पहचान
- सामाजिक संस्कार
- स्वच्छ सामाजिक परम्पराएं
- सांस्कृतिक धरोहर
- गौरवपूर्ण इतिहास
- सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवस्थाएं
- सुसंगठित राष्ट्र

मुझे समाज को क्या देना है

- सामाजिक उत्थान में योगदान
- सामाजिक संस्कारों का आगामी पीढ़ी को हस्तान्तरण
- सामाजिक मानदण्डों का पालन
- स्वच्छ सामाजिक परम्पराओं का संरक्षण, संवर्द्धन एवं परिमार्जन
- सांस्कृतिक धरोहर का सजीव संरक्षण
- इतिहास का प्रेरणादायी उपयोग
- सामाजिक विकृतियों से परहेज एवं बचाव
- राष्ट्र के प्रति समर्पण
- बुजुर्गों से प्रेरणा एवं नवयुवकों को प्रोत्साहन
- जो हो गया उसे सोचा नहीं करते, जो मिल गया, उसे खोया नहीं करते।
- हासिल उन्हें होती है सफलता, जो वक्त और हालात पर रोया नहीं करते।।
- शरीफों की गरीबी में भी, इज्जत कम नहीं होती।
- कर दो सोने के टूकड़े सौ, फिर भी उसकी कीमत कम नहीं होती।।

बात पते की

- जो धनुष बहुत मुश्किल से मुड़ते हैं, वे स्वयं चटक कर टूट जाते हैं।
- शीघ्रता से भूल जाना आश्चर्यजनक है।
- गलतियाँ सर्वोत्तम शिक्षक होती हैं।
- आप बिना कुछ किए अनुभव प्राप्त नहीं कर सकते।
- बोलने की योग्यता श्रेष्ठता प्राप्त करने का छोटा रास्ता है।
- जो अपनी आय से ज्यादा खर्च करता है, उसे पर्स रखने की आवश्यकता नहीं होती।
- बंद दिमाग में नए विचार से जल्दी कोई चीज नहीं भरती।
- बिना सोचे पढ़ना उसी तरह है, जैसे बिना पचाए खाना।
- समय और लहरों की तरह विचार भी किसी व्यक्ति की प्रतीक्षा नहीं करते।
- हमारी समस्या अज्ञानता नहीं बल्कि निष्क्रियता है।

अब स्मार्टफोन की मदद से निकाल सकेंगे एटीएम से पैसे

अब एटीएम से पैसे निकालने के लिए आपको एटीएम कम डेबिट कार्ड या क्रेडिट कार्ड की जरूरत नहीं पड़ेगी। अब आपका स्मार्टफोन एटीएम कार्ड का काम भी करेगा। हालांकि भारत में इस तकनीक के इस्तेमाल में अभी वक्त लग सकता है लेकिन इस तरह की सर्विस अमेरिका के जेपी मोर्गन चैस एटीएम पर इसी साल शुरू होने जा रही है। स्मार्टफोन को रीड करने वाली अपग्रेडेड मशीन इस साल के अंत तक आ जाएगी। इन मशीन्स को आप अपने स्मार्टफोन एप से जनरेट हुए कोड्स की मदद से एक्सेस कर सकेंगे। सूत्रों के अनुसार ये तकनीक का पहला चरण है। अगले चरण में एपल पे और सैमसंग पे की मदद से अकाउंट होल्डर्स को एटीएम एक्सेस मिल सकेगा।



जीवन उत्सवनुमा बन जायेगा !

जीवन को सतत बहते हुए जल प्रवाह की तरह है जिस का हर पल उत्सवनुमा है। ईश्वर मंगलकारी हैं, वो मौत देकर, अमंगल कार्य कैसे कर सकते हैं ? जीवन तो प्रभु काक सबसे बड़ा 'अनुग्रह' है। -प्रसाद' के रूप में मिला है, उसे 'उत्सव' के रूप में मना कर हम प्रभु का गुणगान करते हैं। गमगीन होकर 'मृत्यु' से भय खाना कायरता का द्योतक है। याद रखिए, जो जिंदा हैं, वो किसी ओर नजरिये से मृत्यु को देख रहे हैं, जबकि मरने वाला या तो परमात्मा में लीन होने जा रहा है, या शरीर को नया पाने की फिराक में हैं। दोनों हालातों में गमगीन नहीं है। इंसान तू स्वार्थी क्यों बन हुआ है ? अपने

सुखों को देख रहा है कि तब मेरा जो इससे जो स्वार्थ पूरा होना था, वो नहीं होगा। इसलिए रो रहा है, चिल्ला रहा है। जब शहर में किसी की मृत्यु होती है, संवेदनाएं प्रकट कर हम केवल अपने घर लौट आते हैं। याद रखिए मरने वाला तो 'उत्सव' में है। वह मरता कहां है ? आत्मा कहां मरती है ? आत्मा को न जन्म छूता है न मृत्यु। भगवान श्री कृष्ण गीता में दिव्यता से मृत्यु के बारे में स्पष्ट रूप से आगाह करते हुए कहते हैं, "आत्मा तो हर पल आनंद की अवस्था में रहती है, मरता तो शरीर है और आप शरीर नहीं हों।" मौत के डर से स्वभावतः लोग पहले कई बार

मर चुके होते हैं। मौत का 'खौफ' हटाइयें। यही डर जीवन के आनंद में अवरोधक बना खड़ा है। जीवन उत्सवनुमा बन जाएगा !



संवादहीनता से आती है संबंधों में दूरी

संवाद अर्थात एक व्यक्ति की भावनाओं-इच्छाओं, पसंद-नापसंद को दूसरे के समान शब्दों में व्यक्त करना। बातचीत-चर्चा द्वारा ही हम दूसरे की भावनाओं से अवगत होते हैं किंतु कई बार दूसरे तक अपना मत, विचार सही समय पर या सही ढंग से न पहुंचा पाने से गलतफहमियां जन्म लेती हैं जो आधार होती हैं संबंधों में कसैलेपन या दूरियां का। रिश्ते चाहे पारिवारिक हों या व्यावसायिक, कार्यालयीन हों या पड़ोसियों के मध्य, अगर हमारी बात सही ढंग से दूसरे तक नहीं दुराव शत्रुता तक पहुंच सकता है। प्रायः स्पष्ट



बता न पाने अथवा पूछने में संकोच करने के कारण संबंधी अथवा मित्र की बातों - कार्यों से हमें नुकसान पहुंचा है, तो स्पष्ट रूप से आमने-सामने पूछताछ कर वस्तुस्थिति पता करें, विशेषकर जब कही गई बातों से मानसिक अथवा सामाजिक रूप से आघात पहुंचे। स्वयं हमें भी ऐसी स्थिति में अपना पक्ष समझने की कोशिश करनी चाहिए। रिश्ते करीब के हो या दूर के, यदि उनमें लंबे समय तक संवाद न हो तो दूरी बढ़ना स्वाभाविक है। संबंधों को सजीव बनाए रखने के लिए समय-समय पर मेल-मिलाप, वार्तालाप करना आवश्यक है।

उपवास के समान कोई दवा नहीं है, इससे शरीर हल्का और भोजन में रुचि आ जाती है

उपवास के तुल्य कोई औषधि नहीं है। उपवास से कुपित दोष दूर हो जाते हैं। जठराग्नि प्रदीप्त हो जाती है। शरीर हल्का हो जाता है। भूख-प्यास एवं भोजन में रुचि आ जाती है। आंव का पाचन होकर ओज और बल आ जाता है। आरोग्य आ जाता है।

लवण, विटामिन, एंजाइम एवं फुजला या रफेज होने के साथ शरीर का शोधन करने की अद्भुत शक्ति होती है। काष्ठज फलों में उच्चकोटि का प्रोटीन और न जमने वाला वसा होता है। सेब, संतरा, अमरुद, अंगूर, अनार, तरबूज, सेब, खरबूजा, आंवला, खीरा टमाटर, गाजर, पालक, मेथी इत्यादि फलों-सब्जियों पर रोगी अनेक दिनों तक रह सकता है। इससे अनेक जटिल रोग ठीक हो जाते हैं, ये सारे फल पोटेशियम में भरपूर होते हैं। जिसे उच्च रक्तचाप, गठिया, जोड़ों का दर्द, हृदय रोग, मोटापा आदि रोग ठीक हो जाते हैं। किसी भी रसाहार पर रहने से पहले आठ-दस दिन इस आहार पर रहने से किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है। सभी दूषित पदार्थ शरीर से साफ होकर

रक्त-क्षारीय हो जाता है। शरीर में स्थित बलगम, आंव व श्लेष्माओं का शोधन हो जाता है। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। सारे शरीर का शोधन कर देती है। हमारे ऋषि-मुनि इस प्रकार का आहार लेकर प्रकृति के बीच उच्च अवस्था में रहते थे।



पुदीने की चाय के स्वास्थ्य लाभ



पुदीने को गर्मी और बरसात की संजीवनी बूटी कहा गया है। स्वाद, सौन्दर्य और सुगंध का ऐसा संगम बहुत कम पौधों में दिखने को मिलता है, इसके पौधे की आयु बहुत लम्बी होती है। यह विटामिन-ए से भरपूर होता है। इसका स्वाद व सुगंध भोजन को लजीज बनाता है। पुदीने की चटनी स्वादिष्ट तो होती ही है, सेहत के लिए भी फायदेमंद है। पुदीने का अर्क दवा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। पुदीना पाचक तथा कफ, वायु, उल्टी, और पेट दर्द में बहुत

लाभदायक है।
स्वस्थ पाचन तंत्र
पुदीना हमारे पाचन तंत्र को स्वस्थ बनाता है, यह पेट में बनाने वाली गैस और दर्द को भी खत्म करता है। साथ ही पाचन क्रिया को सुधरता है और भोजन को पचाने में भी मदद करता है।
मितली और चक्कर की परेशानियों से राहत
बहुत लोगों को कार, बस, और ट्रेन में चक्कर और मितली की परेशानी होती

है। इससे बचने के लिए एक कप गर्म पुदीने की चाय ही काफी है। इसकी खुशबू आपको तरो ताज़ा रखती है और पेट की परेशानियाँ जैसे पेट दर्द और दस्त से दूर रखती है।
मुँहासे से बचाव
पुदीना मुहासों के लिए भी बहुत लाभदायक होता है। इसमें मेंथोल होता है, जो त्वचा को ठंडक देता है। इसकी शीतलता, त्वचा में अत्यधिक तेल को रोकता है और मुहासों से भी बचाता है।

महिला संत की प्रेरणा

दक्षिण भारत की महिला संत और्वेयार बचपन में ही अनाथ हो गई थीं। एक सद्गृहस्थ संत ने, जो प्रभु भक्ति के गीत रचते थे, उनका पालन-पोषण किया। अपने धर्मपिता के भक्ति गीतों ने और्वेयार को भगवत् भक्ति की प्रेरणा दी। दस वर्ष की आयु होते ही वे भी भक्ति गीतों की रचना करने लगीं। अपने इष्ट देवता विघ्नेश्वर की पूजा-उपासना में लीन रहतीं। कठोर तप और साधना के बल पर उन्हें अलौकिक सिद्धि प्राप्त हुई। अनेक बीमार और दुःखी उनके पास पहुँचते, तो वे उन्हें जड़ी-बूटियों से निर्मित औषधि देतीं और भगवान् का भजन करने और सात्त्विक जीवन जीकर निरोगी बनने की प्रेरणा देतीं। वे स्वयं गाँवों और नगरों का भ्रमण कर लोगों को सदाचार का उपदेश देतीं। एक बार वे किसी गृहस्थ के द्वार पर भिक्षा माँगने पहुँचीं। उन्होंने देखा कि पति-पत्नी किसी बात पर झगड़ते हुए एक-दूसरे को कटु वचन कह रहे हैं। यह देखकर वे वापस लौटने लगीं। गृहस्वामी उन्हें पहचान गया और उनसे भोजन ग्रहण करने की प्रार्थना करने लगा। संत ने कहा, 'तुम दोनों भविष्य में न लड़ने का संकल्प लो और प्रेम से रहना सीखो, मैं तभी भोजन करूँगी। क्रोध में आकर गालियाँ देने वाले का भोजन मेरी बुद्धि को भ्रष्ट कर देगा।' दोनों ने उनके चरणों में गिरकर क्रोध त्यागने का संकल्प लिया। संत और्वेयार ने असंख्य व्यक्तियों को दुर्व्यसनों से मुक्त कराकर धर्म के मार्ग पर चलाया। उन्होंने कोन्नेर वेन्तन, अरने विचारम् जैसे लोकप्रिय ग्रंथ भी लिखे।

मानव मन के बोल

जब मैं कलकत्ता गया



गतांक से आगे.....
ये लगन प्रभु देता है। ये श्रीनाथ जी की कृपा, ये एकलिंग नाथ जी का आशीर्वाद ऐसे ही नहीं पनपता महाराज, ऐसे ही फलता है। तो मैं निवेदन कर रहा था कलकत्ता में अग्रवाल परिवार में ठहरा, मेरा कोई परिचय ज्यादा नहीं था। लेकिन उन्होंने कितना प्यार से मुझे ठहराया, कक्ष दिया, भोजन कराया, मेरे लिये गाड़ी की व्यवस्था की। उस समय हमें जिस कार्य के लिये सारंगपुर से भेजा गया था। टेलीफोन का कारखाना देखना था। टेलीग्राम का। कैसे खम्भे बनते हैं? कैसे वर्कशॉप नं.1, वर्कशॉप नं.2, वर्कशॉप नं.3, गिनीट कैसे चलती हैं। 3 दिनों के लिये कारखाना देखने गये, मन में खूब खुशियाँ, ये उमंगे भगवान ने दी है। मन में भगवान ने दी है। आपको भी दी और मेरे को भी दी है। जीवन में उमंगे कभी मत छोड़ना। तरंगे मत छोड़ना। मन को हर्षित रखो। और सुख और दुःख के बन्धनों से मुक्त होकर के भगवान की कृपा के पवित्र प्रेम का रसास्वादन कर कृत कृत्य हो जायें। पढ़िये परमेश्वर योगानन्द जी को, कितना काम किया उन्होंने, निराहारी योगिनी, एक ऐसी योगिनी की कथा सुनाई, जो वर्षों से केवल दूध लेती हैं। पावभर दूध लेती 24 घण्टे में, और खूब स्वस्थ रहती हैं। कहां से शक्ति मिली? उनको शक्ति मिली है तो हमें क्यों नहीं मिल सकती? मेरे प्रशान्त बाबू, कल्पना जी, वन्दनाजी, जगदीश जी, कमला जी, आनन्द हो गया। तो कालकत्ता में तीन दिन रहे। वही बातचीत चली, उनके एक मात्र सुपुत्र उन्होंने कहा कि भाईसाहब, हम आचार्य वेद मूर्ति, तपस्वी, पण्डित आचार्य श्रीराम जी शर्मा जी के शिष्य हैं। हमारे बेटे का विवाह हम शांतिकुंज जा कर ही करेंगे। सादे रूप से करेंगे। बोले हमारी आने वाली बहू का परिवार भी गायत्री भक्त है। भगवान की दया से पैसा बहुत है उन के पास, लेकिन उन दोनों ने निर्णय किया कि ना दहेज देंगे ना लेंगे। हमें तो बहु चाहिये। हमारे बेटे को बेचना नहीं, कितना दहेज ने सताया है।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना हमारा सर्वप्रथम कर्तव्य है। शरीर को निरोग रखिए। इसकी शक्ति तथा सहन सामर्थ्य बढ़ाइए। जहाँ तक हो सके, इसे सुन्दर से सुन्दर बनाने का प्रयत्न कीजिए। प्रत्येक व्यक्ति में पैतृक दुर्बलताएँ होती हैं, कालिदास ने कहा 'शरीर ही कर्तव्य पालन का सबसे प्रधान साधन है' (शरीरमाद्य खलु धर्मसा धनम्)। यदि हम सुन्दरा का वरदान पाकर उत्पन्न नहीं हुए, तो भी हम अपने शरीर को स्वस्थ बनाकर रोगों से दूर रखकर, उदात्तमन तथा शान्त मस्तिष्क द्वारा आकर्षक बना सकते हैं। सौन्दर्य केवल त्वचा तक ही सीमित नहीं होता, इसकी गहराई आत्मा तक होती है।

उत्तम स्वास्थ्य के बिना जीवन एक बोझ के समान है। जीवन में कष्ट साध्य तथा परिश्रम जन्य कार्यों के लिए हमको शारीरिक शक्ति तथा सहन सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। हमें ऐसी अनुभूति होनी चाहिए जिसे लोग 'जीवन का हर्ष' कहते हैं। यह अनुभूति हमारे शरीर की प्रत्येक नस-नाड़ी और प्रत्येक अणु को होनी चाहिए। तब निराशा और चिन्ता का अन्धकार हमारे मन को आक्रांत नहीं करेगा। एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए आशावाद उतना ही आवश्यक है, जितनी श्वासोच्छ्वास क्रिया तथा निद्रा। हमें सुखद निद्रा आनी चाहिए। अनिद्रा से निराशा का जन्म होता है, जो सफलता प्राप्ति में बाधक है। यदि हम अपने शरीर को स्वस्थ अवस्था में नहीं रखते, तो बीमारी में हमारा समय नष्ट होगा। समय कभी-कभी धन है, किन्तु समय प्रत्येक काल में जीवन है। जीवन के लघुत्तम समय को भी रूग्णावस्था में नहीं व्यतीत होने देना चाहिए।

हमें मौसंपेशियों को असाधारण रूप से बलशाली बनाने की आवश्यकता नहीं, इस प्रकार का प्रयास तो उन्हें करना है, जिन्हें शारीरिक प्रदर्शन की विद्या अपनानी हो, पहलवान या मुक्केबाज बनना हो। हमें सामान्य स्वास्थ्य, शक्ति, कुशलता तथा स्फूर्ति प्राप्त करनी है। हमें यह उचित अधिकार है कि हमें स्वस्थता का आनन्द प्राप्त करने की इच्छा रखें और दीर्घ आयु प्राप्त करने की कामना करें। शरीर रचना तथा शरीर क्रिया विज्ञान का अध्ययन करके अपने शरीर के बारे में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कीजिए। हमें कुछ एक ऐसी पुस्तकें भी पढ़नी चाहिये, जो विशेषज्ञों द्वारा लिखित हों। अपने सामान्य सूझ-बूझ के द्वारा हमको उन्हें व्यवहार में उतारने का प्रयास करना चाहिए। स्वास्थ्य केवल एक उच्चतर लक्ष्य प्राप्ति का साधन है। हर समय सेहत बनाने के ध्यान में डूबे रहना ठीक नहीं हमें उनका अनुकरण करने का प्रयत्न मत कीजिए जो हर समय कैलोरीज, विटामिन तथा टॉक्सिन की ही रट लगाकर उबा देते हैं। स्वास्थ्य के लिए इस प्रकार की सनक भी एक रोग ही है। अपने शरीर का उचित ध्यान रखिए, किन्तु उचित से अधिक नहीं।

मूर्ख कौन है ?

श्रावस्ती में दो युवक कुसंग में पड़कर जेब काटने और लोगों को ठगने का धंधा करने लगे। वे किसी की जेब पर हाथ साफ करते और किसी दुःखी को देखते, तो तंत्र-मंत्र से सुखी बनाने का आश्वासन देकर ठग लेते थे। एक दिन उन्होंने काफी लोगों को बुद्ध के सत्संग-प्रवचन में जाते देखा। वे दोनों भी वहाँ जा पहुँचे। उनमें से एक के कान में जैसे ही बुद्ध के वचन पहुँचे, वह उस मधुर वाणी की ओर आकर्षित हो गया और चुपचाप बुद्ध का उपदेश सुनता रहा। दूसरे ने इस बीच कई श्रोताओं की जेब साफ कर दी। लौटते समय जेब काटने वाले ने साथी से पूछा, 'तेरे पल्ले क्या पड़ा ?'

उसने कहा, 'मैंने भगवान् बुद्ध के उपदेश के कारण किसी की जेब नहीं काटी।'

यह सुनकर दूसरे ने व्यंग्य से कहा, 'अरे मूर्ख, तू उपदेश से प्रभावित होकर अपने को धर्मात्मा समझ रहा है। क्या अपना और परिवार का पेट उस उपदेश से भर पाएगा ?'

साथी के व्यंग्य भरे वाक्य भी उसे डिगा न सके और उसने उसका साथ छोड़ दिया। अगले दिन वह पुनः भगवान् बुद्ध का उपदेश सुनने जा पहुँचा। सत्संग के बाद तथागत को उसने दोस्त से मन-मुटाव और पिछले दुष्कर्मों की जानकारी देते हुए पूछा, 'मुझे परिवार का काम चलाने के लिए क्या करना चाहिए ?'

तथागत ने कहा, 'अपने हाथों का सदुपयोग कर मजदूरी करो। सात्त्विक जीवन जीओ। मूर्ख तुम नहीं हो, तुम्हारा कुकर्मी साथी मूर्ख है।'

कुछ ही दिन बाद उसका साथी अपराध करता हुआ पकड़ा गया और जेल भेज दिया गया, जबकि उस संकल्पी व्यक्ति की गणना नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होने लगी।

चौपाई

जामवंत के बदन सुहाए। सुनि हनुमंत हृदय अति भाए ॥

तब लगी मोहि परिखेह तुम्ह भाई। सहि दुख कंद मूल फल खाई ॥

जाम्बवान् के सुन्दर वचन सुनकर हनुमान जी के हृदय को बहुत ही भाये। वे बोले - हे भाई! तुम लोग दुःख सहकर, कन्द-मूल-फल खाकर तब तक मेरी राह देखना ॥ 1 ॥ (सुन्दरकाण्ड/रा.मा.)

सद्गुरु से भी ऊँचा स्थान है सेवा का : शून्यों जी महाराज

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ, बड़ी में राधा स्वामी संत मत केंद्र, रामगढ़, (चंडीगढ़) से, संत श्री विजय दयाल शून्यों जी महाराज व गुरु माँ डॉ. मनजीत कौर का शुभागमन हुआ। संस्थान संस्थापक साधु कैलाश जी मानव के पावन सानिध्य में साधकों ने धूमधाम से शोभायात्रा निकाल कर उनका स्वागत सत्कार किया। इस अवसर पर श्री मानव ने कहा कि आत्मा और परमात्मा के योग को ही राधा स्वामी कहा गया है।



संस्थान अध्यक्ष श्री प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि पूज्य शून्यों जी महाराज तथा गुरु माँ ने बड़ी परिसर का अवलोकन किया तथा देश-विदेश से निःशुल्क चिकित्सा हेतु पधारें, रोगी भाई-बहनों की कुशलक्षेम पूछकर उन्हें शीघ्र स्वस्थ होने का आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर दिल्ली, औरंगाबाद, हरिद्वार, नांदेड़, देहरादून तथा पंजाब से पधारें भाई-बहनों ने पूज्य गुरुदेव की मुखारविंद से सत्संग का लाभ उठाया। श्री शून्यों जी महाराज ने कहा कि जब परमात्मा भक्तों की पीड़ा देखते हैं तो उसकी आंखों से करुणा के आंसू बहने लगते हैं और फिर वह साधु कैलाश मानव जैसे संतो के रूप में उनकी सेवा करने व उनका दुःख दूर करने आते हैं। गुरु माँ डॉक्टर मनजीत कौर ने कहा कि नारायण सेवा के कण-कण में संगीत बसा है, सेवा बसी है और यह वास्तविक रूप में ही सेवा का महातीर्थ है। राधा स्वामी संत मत केंद्र भीलवाड़ा से पधारें भक्तों में श्री कैलाश अग्रवाल, रमेश गर्ग, सुनील कंसारा, विजय अग्रवाल, उत्तम सर्राफ व पैसिफिक यूनीवर्सिटी के वाइस चांसलर डी.पी. अग्रवाल ने भी नारायण सेवा में हो रहे सुंदर कार्यों के विषय में अपने विचार व्यक्त किए। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल, ट्रस्टी देवेन्द्र चौबीसा व जगदीश आर्य ने देशभर से आए अतिथियों का मेवाड़ की शान पगड़ी व उपरणा पहना कर स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन महीम जैन ने किया।

मुट्टी में तकदीर

गतांक से आगे.....

आपको पगड़ी..... हां हां आणन्द आईग्यो। आणन्द आईग्यो। आज पूरा परिवार कृपा करके पधारा है। हमारे बजरंगजी मित्तल साहब रायगढ़ मित्तल साहब जय श्री कृष्ण। मित्तल साहब-जय श्री कृष्ण। गुरुजी-कल आपसे टेलिफोन पर बात हुई थी। मेरा मन भरा नहीं। हमारे बाऊजी का भी, बेटे का भी, सबका परिचय, सब को पहनाओ बेटा पगड़ी।

आप पधारें, बड़े भाग्य हमारे, नारायण सेवा तीर्थ में। तन-मन से करें हम स्वागत, हाथों से, फूल और कलियों से।

बहुत अच्छा किया, धन्य हों। आप जैसे अग्रसेनजी महाराज के वंशज मित्तल परिवार बहुत अच्छा। बिराजो, आपको सबको यथाचित स्थान दो। गुरुजी क्या नाम है बेटा आपका ? पूजा बंसल।

महिमजी -जी गुरुदेव, बताना चाहुंगा आपके साथ आपकी धर्मपत्नी हैं। श्रीमती किरणजी मित्तल, आपके जमाई साहब हैं नीरजजी अग्रवाल साहब।

गुरुजी-प्रणाम। जवाई साहब, आईये-आईये जवाई साहब। मंगल हो। पूजाजी आपकी पुत्री हैं। कंवर साहब का शुभनाम क्या है ? नीरज-नीरजजी आपको धन्यवाद। आपके माताजी-पिताजी बाबू को धन्यवाद कि उन्होंने ऐसे दया के संस्कार दिये। हमारा धन्य भाग्य कि मित्तल साहब को ऐसे दामादजी मिले। महिमजी आपकी पुत्री है, पूजाजी साथ में। गुरुजी-पूजाजी मंगल हो। अखण्ड सौभाग्यवति हो। महिमजी- अंजुजी अग्रवाल हैं साथ में, आपकी बहिन हैं वो। आदरणीय मित्तल साहब की। गुरुजी-अच्छा आप बहना हो।

अंजुजी-हां। गुरुजी-मंगल हो।

महिमजी-गौरवजी मित्तल हैं, पुत्र हैं आपके साथ में।

गुरुजी-आओ, गौरव भैया आओ।

चार मिले, चौसठ खिले। बीस खड़े करजोड़।

गुरुजी जी-क्या शुभनाम बताये लाला ? गौरव-गौरव।

गुरुजी-गौरवजी, मानवजी से मिले खिल गये लाख-करोड़। मेरे पापा आपके इतने बड़े भक्त हैं कि पोते का नाम भी नारायण रखा। गुरुजी बहुत अच्छा।

महिमजी-छोटा सा पोता भी आपके साथ में है।

गुरुजी-ये तो अति उत्तम किया, मित्तल जी। भैया बहुत अच्छा किया।

महिमजी-ये आपका पोता भी साथ में है।

गुरुजी-लाला-लाला।

महिमजी -आपकी दोहिती भी साथ में हैं, अनिता।

महिमजी -दोनों नन्हे, मित्तल परिवार के फूल साथ में हैं। गुरुजी-लाओ बेटा गुब्बारा, ऊपर से ले आओ।

हमारा पोता कहाँ है नारायण ? ओ हो-नमस्ते बेटा।

गुरुजी कितनी उम्र है। भैया की लाला की चार साल। चार साल की हमारा भगवान है बेटा।

ऊँ भू भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्

भर्गो देवस्य धीमही, धियो यो नः प्रचोदयात्।

बोलिये अग्रसेनजी महाराज की जय।

गुरुजी-आप तीन पीढ़ी हैं। महिम तीन पीढ़ी हैं।

महिमजी -जी हां, जी हां बिल्कुल हैं।

गुरुजी -और कंवर साहब भी हैं, सोने पर सुहागा। हां वो कहते हैं, बहिन को भाई और सासुजी को जवाई बहुत प्यारे होते हैं।

महिमजी -जी बिल्कुल-बिल्कुल।

गुरुजी-देखिये घोषणा करते हैं, हमारे बजरंगजी मित्तल साहब ने 26 रोगियों को खड़ा कराने के लिए 1 लाख रुपये का दान दिया।

प्रगतचारी पग धर्म के, कलयुग एक प्रधान।

येन-केन विधि दीने, दान करे कल्याण ॥

क्रमशः.....

मुन्य कार्यकानी अधिकानी-कैलाश 'मानव' मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल अख्यक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडनी अंपादक-लक्ष्मीलाल गाडनी अंपादन अह्योगी-घनश्याम त्रिंठ नौटौड

मल्लिकार्जुन

मल्लिकार्जुन द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह ज्योतिर्लिंग श्री शैल पर है। वहां 51 शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ भी है। सती के देह का ग्रीवा भाग जहां गिरा, वहां भ्रमराम्बा देवी का मंदिर है। वीर शैवमत के पंचाचार्यों में से एक जगद्गुरु श्री पति पंडिताराध्य की उत्पत्ति मल्लिकार्जुन लिंग से ही मानी जाती है। श्री शैल पर घोर जंगल है। इस जंगल में बहुत अधिक शेर, चीते, रीछ आदि हैं। इनके अतिरिक्त यह जंगली भीलों का क्षेत्र है। ये भील सुविधा होने पर लूटने एवं हत्या करने में हिचकते नहीं। इन कठिनाइयों के कारण मल्लिकार्जुन की यात्रा शिवरात्रि के अवसर पर या आश्विन नवरात्र में ही शक्य है। शेष समय यहां की यात्रा भोजनादि की सामग्री तथा शस्त्र लेकर ही कर सकते हैं। फाल्गुन-कृष्ण-11 से यात्री श्री शैल पर पहुंचने लगते हैं।

माहात्म्य - स्कंदपुराण में लिखा है - 'श्री शैल मल्लिकेश्वर नाम का द्वितीय ज्योतिर्लिंग है। ये भगवान शिव के अवतार हैं। इनके दर्शन पूजन से भक्तों को अभीष्ट फल मिलता है। स्कंद ने जब शंकरजी की प्रार्थना की, तब वे अत्यंत

प्रेम से कैलाश छोड़कर लिंग रूप में पुत्र को देखने की इच्छा से यहां पधारें थे।

मुने ! यह दूसरा ज्योतिर्लिंग दर्शन पूजन आदि से बहुत सुख देता है और अंत में मोक्ष भी प्रदान करता है, इसमें कोई भी संशय नहीं है।' शैल पर्वत को दक्षिण का कैलाश कहते हैं। महाभारत, शिव पुराण तथा पद्मपुराण आदि धर्मग्रंथों में इसका वर्णन मिलता है। महाभारत में लिखा है कि श्री शैल पर जाकर श्री शिव का पूजन करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। यही नहीं, ग्रंथों में तो इसकी महिमा यहां तक बतलाई गई है कि श्री शैल शिखर के दर्शन मात्र से सब कष्ट दूर से ही भाग जाते हैं और अनंत सुख की प्राप्ति होकर आवागमन के चक्र से मुक्ति हो जाती है।

धार्मिक पृष्ठभूमि - शंकर-सुवन श्री गणेश तथा श्री स्वामी कार्तिकेयजी विवाह के लिए लड़ने लगे। दोनों ही यह चाहते थे कि उनका विवाह पहले हो। अंत में भवानी शंकर ने यह निर्णय लिया कि दोनों में जो पहले पृथ्वी की परिक्रमा कर डालेगा, उसी का विवाह पहले होगा।

यह सुनते ही स्वामी कार्तिक तो दौड़ पड़े। श्री गणेशजी ठहरे भारी शरीर के। वे भला कैसे दौड़ते, परंतु वे केवल शरीर

से ही स्थूल थे, बुद्धि से नहीं। उन्होंने तत्काल एक उपाय ढूँढ़ निकाला। उन्होंने माता पार्वती तथा पिता महेश्वर को आसन पर बैठाकर उन्हीं की सात बार परिक्रमा कर डाली और पूजन किया। इस प्रकार वे पृथ्वी की परिक्रमा के फल को पाने के अधिकारी हो गए। इधर जब स्वामी कार्तिकेयजी लौटे, तब तक गणेशजी का सिद्धि और बुद्धि नामक कन्याओं से विवाह हो चुका था। इतना ही नहीं उनकी दोनों पत्नियों की गोद में क्रमशः क्षेम और लाभ नामक पुत्र भी खेलने लगे थे।

इससे स्वामी कार्तिकेय अपने माता-पिता से रूठ गए। वे कौंच पर्वत पर चले गए। शिव-पार्वती उन्हें मनाने वहां पहुंचे, परंतु उनके आने का समाचार पाकर वे वहां से भी भाग खड़े हुए। कहा जाता है कि कौंच पर्वत पर पहुंचकर श्री शंकरजी ज्योतिर्लिंग के रूप में प्रकट हुए और तब से मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंग नाम से प्रख्यात है।



साथना
कल्याण कल्याण ए. ए. ए. ए.
चैनल पर सोव्या प्रसारण

सादर आमंत्रण

अपंग, अनाथ, रोगी, विधवा, वृद्ध एवं वंचितजनों की सेवा में सतत् सेवारत

नारायण सेवा संस्थान एवं सेवा परमो धर्म ट्रस्ट, उदयपुर

सहायतार्थ

श्रीमद् भागवत कथा

आयोजक

श्रीमद् भागवत एवं रामायण कथा समिति, चण्डीगढ़

दिनांक 05 से 11 मार्च 2016

: समय :

दोप. 03.00 से सांय 06.00 बजे तक

स्थान : नया रंग जी मंदिर, बुर्जा रोड़, चैतन्य विहार
वृन्दावन, जिला - मथुरा (उ.प्र.)

कथा व्यास : पूज्य मुकुन्द हरि जी महाराज

व्यास पीठ पर विराजमान होकर अपने मुखारविन्द से ओजस्वी रसमयी पशुपत्वाणी द्वारा संगीतमय कथा का श्रवणपान करारंग। आपश्चात् से अनुरोध है कि सपरिवार वृष्ट मित्रों सहित पधारकर श्रीमद् भागवत कथा का श्रवण लाभ उठावें।

स्थानीय सम्पर्क सूत्र : 9417569399, 9815346911, 9876190152

संस्थान सम्पर्क सूत्र : 0294-6622222, 9649499999

:: 'निःशयतजन' की सेवा-सहयोग के प्रति समर्पित ::

कैलाश "मानव" मैनेजिंग ट्रस्टी एवं संस्थापक नारायण सेवा संस्थान	कमला देवी कोषाध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	प्रशान्त अग्रवाल अध्यक्ष नारायण सेवा संस्थान	वन्दना निदेशक नारायण सेवा संस्थान
जगदीश आर्य ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान	देवेन्द्र चौबीसा ट्रस्टी एवं निदेशक नारायण सेवा संस्थान		

**भक्ति एवं सेवा के महायज्ञ में एक आहुति आपकी भी...
कृपया सपरिवार अवश्य पधारें ।**